

पाठ-२ कषाय

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137





कषाय किसे
कहते हैं?

★ जो आत्मा को कसे
अर्थात् दुःख दे

★ आत्मा में उत्पन्न
होने वाला विकार
(विभाव)

★ आत्मा के स्वभाव
से विपरीत भाव को
विभाव कहते हैं

★ वि = विपरीत

★ भाव = भाव





स्वभाव

आत्मा का स्वभाव
जानना-देखना है

विभाव

कषाय आत्मा
का विभाव है,
स्वभाव नहीं

कषाय के भेद

गुस्सा घमण्ड छल-कपट लालच

क्रोध



मान



माया



लोभ





क्रोध ?

**दूसरे का बुरा करने
की इच्छा**



मान ?

**दूसरे को नीचा, अपने को
ऊँचा दिखाने की इच्छा**

छल द्वारा कार्य सिद्ध
करने की इच्छा

माया ?

इष्ट पदार्थ के लाभ
की इच्छा

लोभ ?



विभाव

स्वभाव

क्रोध

मान

माया

लोभ

क्षमा

मार्दव(कोमलता)

आर्जव(सरलता)

शौच(पवित्रता)

(राग-द्वेष)आकुलता

आनंद(निराकुलता)



आत्मा



स्वभाव

जानना, देखना,
आनंद आदि

विभाव

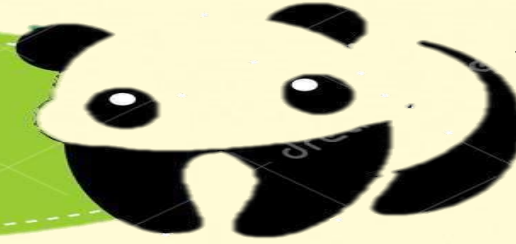
मोह

राग
द्वेष

मोह =
मिथ्यात्व

राग-द्वेष =
कषाय

उल्टी मान्यता



मिथ्यात्व



किसी को भला
जानकर चाहना

राग

किसी को बुरा
जानकर दूर करना चाहना



द्वेष

ईश्वररूप

क्रोध

मान

रागरूप

माया

लोभ



राग



प्रशस्त



अप्रशस्त

शुभ राग

अशुभ राग

कषाय के भेद

★ 4 = क्रोध, मान, माया, लोभ

★ 16 = अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण,
प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन

*(क्रोध, मान, माया, लोभ){4*4}

★ 25 = 16 कषाय + 9 नोकषाय

क्रोध

मान

माया

लोभ

अनंतानुबंधी

अप्रत्याख्या
नावरण

प्रत्याख्या
नावरण

संज्वलन

अनंतानुबंधी

जो मिथ्यात्व के साथ रहे,
मोक्षमार्ग शुरु न होने दे

अप्रत्याख्यानावरण

किंचित् त्याग न होने दे

प्रत्याख्यानावरण

पूर्ण त्याग न होने दे

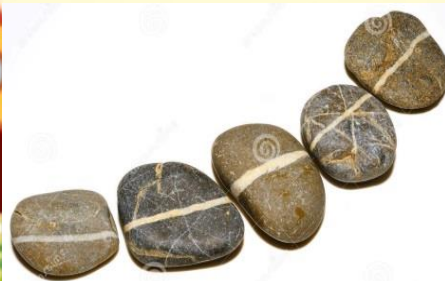
संज्वलन

पूर्ण वीतरागी न होने दे

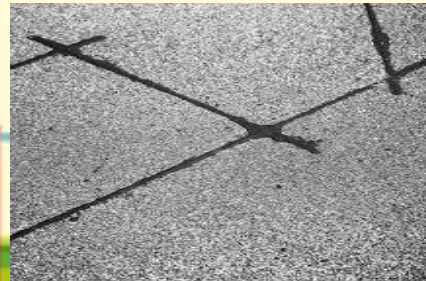
कषाय की अवधि व उदाहरण

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण प्रत्याख्यानावरण संज्वलन

६ माह से
अधिक
पत्थर की
रेखा



१५ दिन
से अधिक
पृथ्वी की
रेखा



अंतर्मुहूर्त
से अधिक
धूलि की
रेखा



अंतर्मुहूर्त
जल की
रेखा





नोकषाय

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



हास्य

शोक

स्त्री वेद

रति

भय

पुरुष वेद

अरति

जुगुप्सा

नपुंसक वेद

★ उल्टी मान्यता
(मिथ्यात्व)

★ परपदार्थ या
तो इष्ट या अनिष्ट
मालूम होते हैं



★ जब हम ऐसा मानते हैं कि
इसने मेरा बुरा किया तो क्रोध
होता है

★ जब हम ये मानते हैं कि
दुनियाँ की वस्तुएँ मेरी हैं, मैं
इनका स्वामी हूँ तो मान होता है





- ★ जब हम ये मानते हैं,
कि छल-कपट से मेरा
काम सिद्ध होगा तो
माया करते हैं
- ★ किसी वस्तु को देख
प्राप्ति की इच्छा होती
है तो लोभ करते हैं



★ तत्त्वज्ञान के
अभ्यास से

★ पदार्थ न तो
अनुकूल मालूम
हों, न प्रतिकूल